सांख्यदर्शन की "प्रकृति" तथा अद्वैत वेदान्त की "अविद्या" एक परिचयात्मक विमर्श

डॉ. प्रीति शुक्ला

सारांश

जीव जगत एवं ईश्वर को जानने की जिज्ञासा प्राचीनकाल से ही मनुष्यों के लिए सर्वाधिक उत्प्रेरक उद्देश्य रहे हैं। आदिकाल से ही हमारे मन्त्रदृष्टा ऋषियों ने इस भौतिक जगत जीव तथा ब्रह्माण्ड के अस्तित्व तथा उनके अस्तित्व की आधारभूत शक्ति के बारे में जानने का प्रयास किया। उनकी इस ज्ञान पिपासा से भारतीय वाङ्मय में एक नये विषय का सृजन हुआ जिसे "दर्शनशास्त्र" के नाम से जाना जाता है। दर्शनशास्त्र का मुख्य विषय ही 'सृष्टि के आधारभूत तत्वों' के विषय में जानने का प्रयास करना है। अनेकों आचार्यों एवं मनीषियों द्वारा इन्ही विषयों पर विशद विचार किए गये तथा 'स्वमत प्रतिस्थापनम् अन्य मत खण्डनम्' की परम्परा का आरम्भ हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप आज हम भारतीय ज्ञानमीमांसा में नौ दर्शनों का अस्तित्व देखते हैं। इन नौ दर्शनों में सबसे प्राचीन दर्शन कपिलमुनि प्रणीत सांख्य दर्शन है तथा अर्वाचीन दर्शन आदिशंकराचार्य का अद्वैतवेदान्त है। प्रस्तुत लेख में सांख्य दर्शन की "प्रकृति" एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन की "माया" जो कि इन दोनों दर्शन के महत्वपूर्ण तत्व हैं के विषय में विवेचन किया गया है।

भूमिका –

भारतीय दर्शन भारतीय मनीषा की सर्वोत्तम उपज है। 'दृश्यते अनेनेति दर्शनम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिस शास्त्र के द्वारा तत्वों के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान एवं बोध हो उसे दर्शन कहते हैं । भारतीय दर्शन का प्रमुख उद्देश्य ही तत्वज्ञान के द्वारा मनुष्य जीवन के दुःखों की निवृत्ति है और इन दुःखो की निवृत्ति की अवस्था को ही 'मोक्ष' नाम से अभिहित किया जाता है। भारतीय दर्शन को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता हैं आस्तिक दर्शन नास्तिक दर्शन ।

जो दर्शन वेदों की सत्ता में विश्वास करते हैं उन्हें आस्तिक दर्शनों की श्रेणी में रखा जाता है ।सांख्य दर्शन योग दर्शन न्याय दर्शन वैशेषिक दर्शन मीमांसा दर्शन तथा वेदान्त दर्शन ये षड् दर्शन आस्तिक दर्शन कहे जाते हैं ।इसके विपरीत जो दर्शन वेदों की सत्ता पर विश्वास नहीं करते उन्हें नास्तिक दर्शनों की श्रेणी में रखा जाता है। चार्वाक दर्शन जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन नास्तिक दर्शन कहे जाते हैं ।

भारतीय दर्शन के उपरोक्त सम्प्रदाय अपने सिद्धान्तों तथा स्वरूप में भिन्न होते हुए भी उद्देश्य की भूमि पर समान तंत्र से प्रतीत होते हैं । तत्वज्ञान एवं साक्षात्कार के द्वारा दुःख निवृत्ति ही समस्त भारतीय दर्शनों का उद्देश्य है। इसी अवस्था को अलगंअलग दर्शनों में मोक्ष निर्वाण इत्यादि नामों से अभिहित किया जाता है।

जब हम भारतीय दर्शनों में तत्वंसाक्षात्कार के सन्दर्भ में विचार करते हैं तो हमें अलगंअलग दर्शनों की तत्वमीमांसा सिद्धान्त का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है ।

इस सन्दर्भ में यहा हम दो प्रमुख भारतीय दर्शनों की तत्वमीमांसा पर विचार करेंगे । जिनमें प्रथम दर्शन है सांख्य दर्शन जिसे सर्वप्राचीन दर्शन होने का गौरव प्राप्त है तथा द्वितीय दर्शन है अद्वैत वेदान्त जो कि अर्वाचीन दर्शन की श्रेणी में रखा जाता है ।

एक ओर सांख्य दर्शन द्वैतवाद में विश्वास करता है दूसरी ओर अद्वैत वेदान्त अद्वैतवाद का प्रबल समर्थक है।

सांख्य दर्शन सांख्य दर्शन महर्षि कपिल द्वारा प्रणीत है।जो **25** तत्वों की सत्ता स्वीकार करता है। जिनमें दो प्रमुख तत्व हैं पुरूष तथा प्रकृति । इसी चेतन पुरूष तथा अचेतन प्रकृति के संयोग से जगत की सृष्टि होती है तथा अज्ञानवश पुरूष इन जन्म मरण के बन्धनों में बधता है।इस बन्धन से मुक्ति तथा अज्ञान निवृत्ति का उपाय है प्रकृति पुरूष विवेक ज्ञान जिसे "सत्वपुरूषान्यताख्याति" भी कहते हैं। यह प्रकृति त्रिगुणात्मिका है अनादि कारण है जड है तथा अव्यक्त है। अज्ञानवश पुरूष प्रकृति के साथ बिम्बप्रतिबिम्बभाव भाव से जुडता है ।तथा सृष्टि प्रकिया प्रारम्भ होती है अतएव सांख्य की प्रकृति अचेतन होते हुए भी जगत का आदि कारण है तथा पुरूष को प्रवृत्ति के मार्ग पर ले जाने का कार्य करती है।

वेदान्त दर्शन वेदान्त दर्शन का आधार बादरायण का "ब्रहमसूत्र" है ।ब्रहमसूत्र अन्य सूत्रों की तरह संक्षिप्त तथा दुर्बोध थे। इनकी दुर्बोधता को दूर करने के उद्देश्य से अनेक भाष्यकारों ने ब्रहमसूत्र पर अपना अलगं अलग भाष्य लिखा ।प्रत्येक भाष्यकार ने अपने भाष्य की पुष्टि के निमित्त वेद और उपनिषद में वर्णित विचारों का उल्लेख किया । इस कारण जितने भाष्यकार हुए उतने ही वेदान्त दर्शन के सम्प्रदाय विकसित हुए ।आचार्य शंकर रामानुजाचर्य मध्वाचार्य बल्लभाचार्य निम्बार्काचार्य इत्यादि आचार्य वेदान्त दर्शन के विभिन्न सम्प्रदाय के प्रर्वतक बन गये। इस प्रकार वेदान्त दर्शन के अनेक सम्प्रदाय विकसित हुए इनमें अद्वैतवाद मुख्य है। वेदान्त के "अद्वैतवादी सम्प्रदाय" के प्रर्वतक आदिशंकराचार्य हैं । वेदान्त दर्शन के समस्त सम्प्रदायों में सबसे प्रधान तथा लोकप्रचलित शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन ही है। "ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरं" अर्थात ब्रहम ही एकमात्र सत्य है। जगत मिथ्या है तथा जीव और ब्रहम अभिन्न हैंयह अद्वैत वेदान्त का आधार

वाक्य है । तत्वमीमांसा की दृष्टि से अद्वैत वेदान्त केवल एक ही तत्व की सत्ता स्वीकार करता है और वह तत्व हैं ब्रह्म। वह त्रिकालातीत तथा सर्वव्यापक है ।उसी ब्रह्म का विवर्त मात्र यह जगत है ।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार ब्रह्म ही सम्पूर्ण विश्व का आधार है। उसी आधार स्वरूप ब्रह्म में माया के द्वारा समस्त जगत प्रपन्च की सृष्टि की जाती है ।इसी मत को हम "विवर्तवाद" के नाम से जानते हैं।शंकराचार्य के अनुसार सृष्टि के उसी आधार स्वरूप ब्रह्म की शक्ति माया अथवा अविद्या के नाश द्वारा ब्रह्मसाक्षात्कार तथा ज्ञान प्राप्ति होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है ।जो मानव जीवन तथा भारतीय दर्शनों का परम उद्देश्य है ।

सांख्य के परिणामवाद तथा अद्वैतवेदान्त के विवर्तवाद का कारण क्या है। वो कौन सा तत्व है जो सांख्य दर्शन में परिणामवाद के द्वारा सृष्टि प्रकिया का संचालन करता है तथा वेदान्त में विवर्तवाद के द्वारा ।

इस परिणामवाद के सिद्वान्त का आधार सांख्य की प्रकृति तथा विवर्तवाद के सिद्वान्त का आधार अद्वैत की माया है।

<u>सांख्य की प्रकृति</u> □सांख्य दर्शन स्वीकृत **25** तत्वों में प्रकृति तथा पुरूष ये दो मुख्य तत्व हैं। प्रकृति स्वतंत्र□ अचेतन□क्रियाशील□अव्यक्त□तथा अविवेकी है। सत्व□रजस तथा तमस् इन तीनों गुणों की साम्यावस्था प्रकृति इन तीनों गुणों के माध्यम से पुरूष को बन्धन में डालती है । प्रकृति के संपर्क में आने पर पुरूष इन्हीं तीनों गुणों के साथ साम्य अपनाते हुए अपने आपको इनके प्रभाव से सुखी □दुःखी तथा उदासीन रूप में अनुभव करता है। प्रकाश□प्रवृत्ति तथा नियमन स्वभाव वाले ये सत्व□रजस तथा तमसँ ये तीनों गुण प्रकृति की शक्ति हैं।इसी कारण प्रकृति से उद्भूत सभी पदार्थों में इनका अस्तित्व होता है। सांख्य की प्रकृति सृष्टि का मूल कारण है।यह पुरूष की प्रेरक है साथ ही उसे निवृत्ति की ओर उन्मुख करने वाली भी है ।

सृष्टि प्रकिया हेतु पुरूष' प्रकृति के संयोग के स्वरूप को "सांख्यकारिका" में स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि'

"पुरूषस्य दर्शनार्थ कैवल्यार्थ यथा प्रधानस्य ।

पङ्गवन्धवदुभयोरपि संयोगस्तकृतः सर्गः।।"

अर्थात पुरूष के द्वारा प्रधान के दर्शन या भोग के लिए तथा पुरूष के दुःखत्रायाभाव रूप कैवल्य या मोक्ष के लिए लगड़े और अंधे के समान दोनों का अर्थात पुरूष और प्रकृति का संयोग होता है और फिर इस संयोग के द्वारा ही सृष्टि होती है ।इस प्रकार हम देखते हैं कि सांख्य के अनुसार प्रकृति ही इस समस्त चराचर जगत का आदि कारण है।सभी चराचर पदार्थ इसी प्रकृति से सृष्टि के समय उद्भूत होते हैं तथा प्रलय के समय इसी प्रकृति में इनका तिरोभाव हो जाता है।

अद्वैत की अविद्या' अद्वैतवाद में अविद्या को जगत की कर्तृ माना गया है ।वेदान्त दर्शन का यह दृढ विश्वास है कि संसार की सृष्टा होने के साथ ही संसार के समस्त बन्धनों का मूल कारण अविद्या है।अविद्या उस सच्चिदानन्द निर्गुण ब्रह्म की परम शक्ति है जो उस आधार स्वरूप ब्रह्म में सम्पूर्ण जगतप्रपन्च की सृष्टि कर देती है ।अविद्या का स्वरूप अद्वैत वेदान्त में अनिर्वचनीय कहा गया है ।अविद्या को माया तथा अविद्या के नाम से भी जाना जाता है।योगीन्द्र सदानन्द ने स्वरचित "वेदान्तसार" नामक ग्रन्थ में अविद्या का लक्षण देते हुए कहा है'

"अज्ञानं तु सदसदाभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधी भावरूपं यदकिंचिदिति वदन्त्यहमज्ञं इत्याद्यनुभवात् देवात्मशक्तिंस्वगुर्णैनिगुढाम् इत्यादि श्रुतेश्च।"

अर्थात् अविद्या सत् एवं असत् रूप से परिभाषित न किये जा सकने के कारण अनिर्वचनीय है।यह सत्व□रजस् तथा तमस् इन तीनों गुणों से युक्त है।यह ज्ञान का विरोध करती है तथा भावरूप है।अविद्या को सद्रूपता अथवा असद्रूपता से निरूपित नहीं किया जा सकता।अतः उसे यत्किंचिदिति कहा गया है।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार अविद्या की दो शक्तियां□है।' **1□आवरण 2□विक्षेप**

आवरण शक्ति'आवरण शब्द का अर्थ होता है' "किसी वस्तु के यथार्थ स्वरूप को आच्छादित कर देना।" अपनी इस शक्ति के द्वारा अविद्या वस्तु के यथार्थ स्वरूप को ढक□देती है ।जिस समय बादल सूर्य को ढक□लेता है□उस समय अज्ञानी व्यक्ति सूर्य को प्रकाश रहित समझता है। ठीक उसी प्रकार अविद्या अपनी इस आवरण शक्ति के द्वारा आत्मा के स्वरूप को ढक□देती है।

विक्षेप शक्ति'आवरण शक्ति के द्वारा वस्तु के यथार्थ स्वरूप का आवरण करने के पश्चात अविद्या अपनी विक्षेप शक्ति के द्वारा उस वस्तु में मिथ्या प्रपंच की सृष्टि करती है। जैसे कि अंधकार में पडी हुई रस्सी में अविद्या की आवरण शक्ति के कारण उस रस्सी का स्वरूप ढक□गया। अब उस रस्सी में विक्षेप शक्ति सर्प की मिथ्या प्रतीति कराती है। इस प्रकार अविद्या की विक्षेप शक्ति मिथ्या पदार्थों को उत्पन्न करती है।

इस अज्ञान या अविद्या से प्रभावित होकर मनुष्य रज्जु को सर्प समझकर भयभीत हो उठता है। यह उसी अविद्या का प्रभाव है कि त्रिकालाबाधित,सच्चिदानन्द ब्रह्म जीव के नेत्रों से अग्राह्य रहता है तथा मिथ्या जगत उसे सत्य प्रतीत होता है।किन्तु उस क्षण विशेष में जबकि उसके नेत्रों से अज्ञान का पर्दा हट जाता है□**"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या"** इस महावाक्य की सत्यता की प्रतीति होने लगती है । इसका तात्पर्य यह है कि ज्ञान का उदय होते ही माया की शक्ति नष्ट हो जाती है ।दीपक के प्रकाश में अंधकार के रूप का निश्चय नहीं होता है□वरन् अविमल मूर्तिमान तमस् का केवल नाश ही होता है। उसी प्रकार ज्ञान होने पर अविद्या न जाने कहा□चली जाती है। अतएव अविद्या का दर्शन तभी तक होता है□जब तक ज्ञान की दृष्टि से उसका विवेचन न किया जाए ।

उपसंहार

इस प्रकार हम देखते हैं कि सांख्य की प्रकृति तथा अद्वैत वेदान्त की अविद्या कर्तृत्व की भूमि पर काफी हद तक समान सत्ता वाले प्रतीत होते हुए भी अस्तित्व के धरातल पर असमान प्रतीत होते हैं । क्योंकि सांख्य दर्शन में जहा प्रकृति को प्रधान तथा स्वतंत्र स्वीकार किया गया है वहीं अद्वैत वेदान्त दर्शन में अविद्या उस सच्चिदानन्द ब्रह्म की शक्ति है तथा ब्रह्म के अधीन है। परन्तु ये दोनों ही तत्व मनुष्य जीव के आत्मसाक्षात्कार तथा मोक्ष रूपी प्रयोजन की सिद्धि में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायक ही होते हैं।

भारतीय दार्शनिक विचारधारा के इन दो प्रमुख दर्शनों के ये दो प्रमुख तत्व सदैव ही अपने विलक्षण गुणों के कारण भारतीय दार्शनिकों के चिन्तन क्षेत्र का विषय रहे हैं। तथा वर्तमान में भी इनके जटिल तथा विस्तृत स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए शोधार्थियों द्वारा अनेक शोध कार्य किये जा रहे हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1 वेदान्तसार योगीन्द्र सदानन्द

2 ब्रह्मसूत्र बादरायण

3 वेदान्त परिभाषा धर्मराजा ध्वरीन्द्र

4 सांख्यकारिका ईश्वर कृष्ण

5 सांख्यतत्वकौमुदी वाचस्पति मिश्र

6 भारतीय दर्शन डा बलदेव उपाध्याय

7 सांख्यदर्शन स्वामी निरजानन्द सरस्वती

8 सांख्य दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त अणिमा सेन गुप्ता

9 वेदान्त तत्व विचार स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती

10. History of philosophy (Dr.Rsdhakrishnan)

11. The Doctrine of Maya (Shastri, P.D.Luzac & Co: Kolkata)

12. Vedanta Philosophy (Sridhar Majumadar)